B.Ed – 2nd Year **Nakul Sah**

Biological Science **Assistant Professor**

Course- 7 (b)

Lecture - 32

Kinds of Evaluation
मूल्यांकन के प्रकार

Rest of lecture 31

★ सक्ष्म मूल्यांकन (Micro evaluation) एवं वृहद मूल्यांकन (Macro evaluation)

जब मूल्यांकन किसी व्यक्ति विशेष और उसकी उपलब्धियो तक सीमित हो तो इसे तो सक्ष्म मूल्यांकन कहते है। अर्थात् सक्ष्म मूल्यांकन किसी बड़े समूह के परीक्षण से सम्बन्धित होता है। उदाहरण – बोर्ड परीक्षायें प्रतिभा खोज परीक्षा वृहद मूल्यांकन के उदाहरण है। यदि गम्भीरता से विचार करें तो वृहद् मूल्यांकन सूक्ष्म मूल्यांकन के बिना सम्भव नही है। वृहद मूल्यांकन के लिये सक्ष्म मूल्यांकन आवश्यक है। इसी प्रकार पाठ व इकाई परीक्षण सक्ष्म मूल्यांकन के प्रकार है जबकि सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से परीक्षण वृहद मूल्यांकन का प्रकार है।

★ सरंचनात्मक मूल्यांकन व समेकित मूल्यांकन (Formative Evaluation & Summative Evaluation)

NAKUL SAH

सन् 1967 में माइकल स्क्रीवन (Michael criven) ने मूल्यांकन के निम्नलिखित दो प्रकारों की चर्चा की :-

1. सरंचनात्मक मूल्यांकन (Formative evaluation)

यदि मूल्यांकन के इस नाम संरचनात्मक की व्याख्या करें तो स्पष्ट होता है कि ऐसा मूल्यांकन जो उस समय किया जाय जब अधिगम की रचना हो रही है (Evaluation during formation of learning) सरंचनात्मक मूल्यांकन किया जाता है। इसका उद्देश्य सीखने–सिखाने के दौरान विद्यार्थियों की प्रगति का निरीक्षण कर उसमें सुधार लाना है। इसी कारण इसे सीखने के लिये, ऑकलनें (Assessment learning) के साथ जोड़ा जाता है। सीखने के दौरान किये गये आकलन से विद्यार्थियों के बारे में एकत्रित की जानकारी शिक्षक को किसी विषय में विद्यार्थियों की क्षमताओं व सीखने की कमी की पहचाने करने में सहायक होती है। यह शिक्षकों को विद्यार्थियों की ज़रूरतों के अनुसार सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को ढालने में मदद करती है।

2. समेकित या योगात्मक आकलन (Summative evaluation)

किसी भी पाठ, इकाई, सत्र या वर्ष की समाप्ति पर जो मूल्यांकन किया जाता है इसे समेकित या योगात्मक मूल्यांकन कहते है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों की कुल उपलब्धि को जॉचना है और इसके आधार पर उन्हे ग्रेड प्रदान करना है। इसलिए इसे सीखने का आकलन

NAKUL SAH

Assessment of learning के है। अर्धवार्षिक व वार्षिक परीक्षाये समेकित मूल्यांकन के उदाहरण है।

★ संरचनात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन में अन्तर –

संरचनात्मक मूल्यांकन	योगात्मक मूल्यांकन
1.संरचनात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य विद्यार्थियों की क्षमताओं व कमज़ोरियों का पता लगाना है।	1.योगात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य विद्यार्थियों का वर्गीकरण करना व प्रोन्निति है।
2.संरचनात्मक मूल्यांकन द्वारा जो साक्ष्य इकट्ठे किये जाते है उनका प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आवश्यक सुधार हेतु किया जाता है जिससे विद्यार्थियों के उपलब्धि के स्तर को बढ़ाया जा सके।	2.योगात्मक मूल्यांकन के परिणामों का प्रयोग छात्रों की उपलब्धि स्तर को निर्धारित करने और उन्हें ग्रेड या सर्टिफिकेट देने के लिए किया जाता लें
3.इकाई परीक्षण, प्रोजक्ट आदि के द्वारा यह सतत् मूल्यांकन को परिलक्षित करता है।	3.यह सत्रांत परीक्षा अर्द्धवार्षिक परीक्षा या वार्षिक परीक्षा द्वारा कार्याअन्त को परिलक्षित करता है।
4.इसका सम्बन्ध शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से है।	4.इसका सम्बन्ध उत्पाद से है।

★★★★★

NAKUL SAH